तृतीय अध्याय

"तुलनात्मक अध्ययन और विवेच्य उपन्यासों के तुलनात्मक अध्ययन का स्वरूप"

तृतीय अध्याय

" तुलनात्मक अध्ययन और विवेच्य उपन्यासों के तुलनात्मक अध्ययन का स्वरूप "

3.1 तुलनात्मक अध्ययन :

3.1.1 'तुलना' शब्द का अर्थ -

तुलना शब्द 'तुल' धातु से भाववाचक संज्ञा के रूप में निर्मित हुआ है। 'तुलना' शब्द का अर्थ है बराबरी, मुकाबला एवं होड़। 'हिंदी विश्वकोश' में तुलना शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया है - "1. तौल जाना। 2. उदयन होना, उतारु होना। 3. गाडी के पहिये का औंगा जाना। 4 पुरित होना, भरना। 5. नियमित होना, अंदाज होना। 6. ठोक अंदाज के साथ टिकना। 7. तुल्य होना, तौल में बराबर उतरना।"[1] 'संस्कृत-हिंदी कोश' में 'तुलना' के अर्थ के संबंध में लिखा है - "1. तौलना, 2. उठाना, 3. तुलना करना, उपमा देना आदि। ना. 1. तुलना, 2. तोलना, 3. उठाना, उन्नयन, 4. निर्धारण करना, आंकना, प्राक्कलन करना, 5. परीक्षा करना।"[2] 'नालंदा विशाल शब्द सागर' में 'तुलना' शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया है - "1. तराजू पर तोला जाना, 2. तौल या मान में बराबर उतरना। 3. आधार पर इस प्रकार जमकर खड़ा होना या ठहरना कि कोई भाग किसी ओर झुका न रहे। 4. नियमित होना। बँधना। 5. गाड़ी के पहिये का औंगा जाना। 6. उद्यत होना। किसी काम या बात पर तुलना - कोई काम करने के लिए उद्यत होना। 1. दो या दो से अधिक वस्तुओं के गुण, मान आदि के एक-दूसरे से कम-अधिक अथवा अच्छी या बुरी होने का विचार। मिलान। तारतम्य। 2. सादृश्य। समानता। 3. उपमा।"[3]

डॉ. हरदेव बाहरी ने 'हिंदी शब्दकोश' में 'तुलना' शब्द का अर्थ दिया है - "1. समता, सादृश्य, बराबरी, 2. मिलान, 3. उपमा, उठाना. 1.तौल जाना, मापित होना, 2. तौल में समान होना, 3. सधकर स्थित होना (जैसे तुलकर बैठना), 4. साधना, 5. सन्नदूध या उतारु होना।"[4] विश्वकोशात्मक 'ऑक्सफर्ड डिक्शनरी' में 'तुलना' शब्द का अर्थ इस

---

1. सं. नगेंद्रनाथ वसु - हिंदी विश्वकोश (खंड 9), पृष्ठ - 682
2. सं. वामन शिवराम आपटे - संस्कृत-हिंदी कोश, पृष्ठ - 433
3. सं. श्री. नवल जी - नालंदा विशाल शब्द सागर, पृष्ठ - 530
4. सं. हरदेव बाहरी - हिंदी शब्दकोश, पृष्ठ - 367

प्रकार दिया है - "Compare - To bring together or side by side in order to note points of difference and more especially resemblance between."[1]

उपर्युक्त विवेचन से निष्कर्षत: कहना सही होगा कि एक वस्तु को दूसरी वस्तु के साथ गुण-दोषों की तुलना करना और उनमें स्थित साम्य-भेद बतलाना ही 'तुलना' है।

3.1.2 'तुलना' शब्द की परिभाषा -

'तुलना' शब्द को अनेक विद्वानों ने अपने-अपने विचार के अनुसार व्याख्यायित करने का प्रयास किया है। मराठी के सुप्रसिद्ध विद्वान वसंत बापट 'तुलना' शब्द की परिभाषा को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं - "साधर्म्य आणि वैधर्म्य, उद्‌गम आणि प्रभाव या चार अंगांनी घेतलेला शोध असे करता येईल."[2] (साधर्म्य और वैधर्म्य, उद्‌गम और प्रभाव इन चारों अंगों से लिया गया शोध यानी तुलना है।) डॉ. एस्. गुलाम रसूल और डॉ. सरगु कृष्णमूर्ति 'तुलना' शब्द को परिभाषित करते हुए कहते हैं - "तुलना विकसित मस्तिष्क की पिपासा से परिणमित ज्ञान-यात्रा है जिसका लक्ष्य नवासी अन्वेषण एवं आत्मसंशोधन है।"[3] डॉ. इंद्रनाथ चौधरी 'तुलना' शब्द को परिभाषित करते हुए कहते हैं - "तुलनात्मक साहित्य विभिन्न साहित्यों का तुलनात्मक अध्ययन है तथा साहित्य के साथ प्रतीती एवं ज्ञान के दूसरे क्षेत्रों का भी तुलनात्मक अध्ययन है।"[4]

'तुलना' शब्द को स्पष्ट करते हुए डॉ. नगेंद्र कहते हैं - "तुलनात्मक साहित्य जैसा कि उनके नाम से स्पष्ट है, साहित्य का तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन प्रस्तुत करता है। यह नाम पद वास्तव में एक प्रकार का न्यून पदीय प्रयोग है और साहित्य के तुलनात्मक का वाचक है।"[5] 'Comparative literature' को अंग्रेजी के Webster's Third New International Dictionary of the English Language में इस प्रकार प्रस्तुत किया है - "The study of interrelationship of the literatures of two or more national cultures use. of differing languages and esp. of the influences of one upon the other."[6] (दो विभिन्न

1. Ed. Nella Thompson - Oxford Dictionary, Pg - 233
2. वसंत बापट - तौलनिक साहित्याभास : मूलतत्वे आणि दिशा, पृष्ठ - 23
3. सं.डॉ.एस्. गुलाम रसूल, डॉ. सरगु कृष्णमूर्ति - तुलनात्मक अनुसंधान एवं उसकी समस्याएँ, पृष्ठ - 11
4. डॉ. इंद्रनाथ चौधरी - तुलनात्मक साहित्य की भूमिका, पृष्ठ - 05
5. सं. डॉ. नगेंद्र - तुलनात्मक साहित्य, पृष्ठ - 12
6. Ed. Philip Babcock Gore - Webster's Third New International Dictionary of English Language, Pg - 462

देश, दो विभिन्न संस्कृतियों और दो विभिन्न भाषाओं के साहित्य का और उनके परस्पर प्रभावों के साहित्य का अंत:संबंध ही तुलनात्मक अध्ययन है।)

उपर्युक्त परिभाषाओं पर विचार करने से स्पष्ट होता है कि किन्हीं दो विषयों, वस्तुओं या व्यक्तियों को लेकर समानता-असमानता, श्रेष्ठता-कनिष्ठता आदि दृष्टियों से समीक्षा करना ही तुलना है लेकिन आम तौर पर 'तुलना' शब्द का यह अर्थ सीमित है। तुलना शब्द का सामान्य अर्थ एक वस्तु या व्यक्ति को किसी दूसरी विषय वस्तु या व्यक्ति से बढ़ा-चढ़ाकर दिखाना या उनके गुण-दोषों को स्पष्ट करना ही तुलना मानते हैं लेकिन यहाँ इतना अपेक्षित नहीं तो एक ही भाषा की दो साहित्य कृतियों के तथा दो भिन्न भाषा-भाषी साहित्य के परिवेश का, परिस्थितियों का अध्ययन करके उन दो कृतियों में स्थित साम्य-वैषम्य को तटस्थता के साथ तथा वस्तुनिष्ठता की दृष्टि से स्पष्ट करना ही तुलना है।

3.1.3 तुलनात्मक अध्ययन की उपयोगिता -

साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन वर्तमान समय एवं समाज की दृष्टि से अत्यधिक उपयोगी है। तुलनात्मक अध्ययन के जरिए विभिन्न संस्कृतियों, विभिन्न समाज की विचारधाराओं का तथा सभी धरातलों पर अध्ययन कर विकास किया जा सकता है। तुलनात्मक अध्ययन की उपयोगिता के बारे में मराठी के प्रसिद्ध विद्वान बापट जी लिखते हैं - "तौलनिक परिशीलनामुळे दुसऱ्या साहित्याचे गुणधर्म आपण ओळखू लागतो एवढेच नव्हे तर आपल्या साहित्याचे गुणधर्म ही आपण चांगले ओळखू लागतो."[1] (तौलनिक साहित्य अध्ययन की वजह से दूसरे भाषी साहित्य की विशेषताओं का पता चलता है, इतना ही नहीं बल्कि अपने साहित्य की विशेषताओं को भी हम अच्छी तरह से परखने लगते हैं।) उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि अध्ययनकर्ता को दूसरे साहित्य के गुण-दोषों का पता तो चलता ही है इसके साथ-साथ अपने साहित्य की ऊँचाई या श्रेष्ठता को भी समझने में मदद होती है। डॉ.उमा शुक्ला लिखती हैं - "तुलनात्मक शोध के माध्यम से विभिन्न भाषाओं एवं उनके विविध साहित्य रूपों में विद्यमान सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता की भावना को

---

1. वसंत बापट - तौलनिक साहित्याभ्यास : मूलतत्वे आणि दिशा, पृष्ठ - 22

सुदृढ़ करके उपस्थित चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए उपयुक्त मनोभूमि को विकसित एवं परिपुष्ट किया जा सकता है।''[1] कहना सही होगा कि विभिन्न भाषाओं एवं विविध साहित्य रूपों में विद्‌यमान सांस्कृतिक एकता के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता की भावना को सुदृढ़ बनाने के लिए तुलनात्मक अध्ययन की उपयोगिता है।

तुलनात्मक अध्ययन की उपयोगिता के बारे में मराठी के प्रसिद्‌ध विद्‌वान बापट लिखते हैं - ''आज सर्व जगात वाङ्मय विचारात घेणे अशक्य असल्यामुळे खंडशः तौलनिक अभ्यास करणे हेच अधिक उपयुक्त ठरते.''[2] (आज सारी दुनिया का साहित्य विचारार्थ लेना असंभव है। इसलिए खंडशः तौलनिक अध्ययन करना ही ज्यादा सही प्रतीत होता है।) द्रष्टव्य कथन से स्पष्ट होता है कि साहित्य के तौलनिक अध्ययन के जरिए विश्वसाहित्य को हम एक जगह ला सकते हैं और कम से कम कष्ट में विश्व साहित्य के ज्ञान को प्राप्त कर सकते हैं। तुलनात्मक अध्ययन की उपयोगिता के बारे में डॉ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र लिखते हैं - ''भाषावार राज्यों के निर्माण के कारण विघटन के प्रति आज-कल जो विशेष मोह प्रकट हो रहा है, उसको विराम देने तथा देशीय एवं भावात्मक एकता को पुष्ट करने में विभिन्न भाषाओं के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन की उपयोगिता स्वतः सिद्‌ध है।''[3] कहना आवश्यक नहीं कि विघटनवादिता को दूर करना एवं भावात्मक एकता स्थापित करना तुलनात्मक अध्ययन से संभव होता है।

तुलनात्मक अध्ययन की उपयोगिता के बारे में डॉ. चंद्रभानु सोनवणे का कहना है - ''इस तुलना के द्‌वारा कला सृजन की प्रक्रिया को समझने में भी सहायता मिल सकती है।''[4] वे तुलनात्मक की उपयोगिता के बारे में अपनी बात को व्याख्यायित करते हुए लिखते हैं - ''भारतीय भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन विशेषतः हिंदी और हिंदीत्तर भारतीय भाषाओं के व्याकरण के अध्ययन, हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्‌ध हो सकते है।''[5] उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि व्याकरण के साथ-साथ हिंदी भाषा एवं उसके प्रचार-प्रसार के लिए भी तुलनात्मक अध्ययन उपयोगी है। अनुवाद कला को सिखने की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन की उपयोगिता को स्पष्ट करते हुए डॉ. अर्जुन चव्हाण लिखते

1. सं.डॉ. उमा शुक्ला, डॉ. माधुरी छेडा - साहित्यिक शोध : प्रविधि एवं व्याप्ति, पृष्ठ - 74
2. वसंत बापट - तौलनिक साहित्याभ्यास : मूलतत्त्वे आणि दिशा, पृष्ठ - 80
3. सं. डॉ. गुलाम रसूल, डॉ. सरगु कृष्णमूर्ति - तुलनात्मक अनुसंधान एवं उसकी समस्याएँ, पृष्ठ - 75
4. सं.डॉ.भ.हा.राजूरकर, डॉ. राजमल बोरा - तुलनात्मक अध्ययन स्वरूप और समस्याएँ, पृष्ठ - 30
5. वही, पृष्ठ - 31

हैं - "अनुवाद तुलनात्मक अध्ययन का एक प्रधान साधन बन गया है जिससे दो भिन्न-भिन्न भाषाओं में स्थित समानता और विषमता का बोध होता है।"[1] कहना गलत नहीं होगा कि तुलनात्मक अध्ययन से अनुवाद कला सिखने में मदद होती है।

तुलनात्मक अध्ययन की उपयोगिता को स्पष्ट करते हुए डॉ. यादवराव धुमाल लिखते हैं - "दोनों भाषाओं में वर्णित सामाजिक समस्याओं को प्रकाश में लाया जाता है। दोनों भाषिक प्रदेशों की स्त्री-पुरुषों की स्थिति, विविध साहित्यिक वाद और शिल्प पर भी प्रकाश डाला जाता है। सम्बन्धित भाषाओं में चित्रित सभी अंगो-प्रतिअंगों को खोलकर रखा जाता है। इस में दोनों भाषाओं की उच्च-नीचता, गहराई-उथलापन निर्धारित किया जा सकता है।"[2] उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि साहित्यिक वाद, शिल्प, भाषा की उच्च-नीचता का पता तुलनात्मक अध्ययन से चलता है। तुलनात्मक अध्ययन की उपयोगिता को स्पष्ट करते हुए डॉ. सरयू प्रसाद चौबे लिखते हैं - "तुलनात्मक अध्ययन की शिक्षा से घटकों की समानता और विभिन्नता का पता चलता है।"[3]

देश की विभिन्न भाषाओं में निहित भाषिक सामर्थ्य तथा उसकी सीमाएँ समझने में मदद होती है। देश की विभिन्न भाषाओं में निहित साहित्य संपदा से पूरे देश को परिचित कराने के लिए, विश्वसाहित्य को एकसूत्र में बाँधने, विभिन्न राष्ट्र या राज्य के विभिन्न संस्कृतियों में आदान-प्रदान करने के लिए तुलनात्मक अध्ययन की उपयोगिता है।

3.1.4 तुलनात्मक अध्ययन का महत्त्व -

आज विश्व-साहित्य को एकसूत्र में बाँधने के लिए, विभिन्न भाषाओं में समन्वय स्थापित करने के लिए तुलनात्मक अध्ययन का महत्त्व निर्विवाद है। तुलनात्मक अध्ययन के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए डॉ. रवींद्रकुमार जैन लिखते हैं - "तुलनात्मक अनुसंधान हमारी अनेक प्रकार की विघटनशीलता को दूर कर हमारी मूलभूत एकता की पुन:स्थापना कर सकता है।"[4] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि तुलनात्मक अध्ययन विघटनशीलता को दूर कर एकता की स्थापना करता है। वे आगे लिखते हैं - "हिंदी एवं अन्य प्रादेशिक एवं साहित्य में तुलनात्मक अनुसंधान से आदान-प्रदान की भावना बढ़ेगी। दोनों एक-दूसरे की नयी एवं

---

1. डॉ. अर्जुन चव्हाण - अनुवाद चिंतन, पृष्ठ - 25
2. डॉ. यादवराव धुमाल - साठोत्तरी हिंदी और मराठी के सामाजिक उपन्यासों का प्रवृत्तिमूलक तुलनात्मक अध्ययन, पृष्ठ - 24
3. डॉ. सरयू प्रसाद चौबे - तुलनात्मक शिक्षा, पृष्ठ - 09
4. सं. डॉ. गुलाम रसूल, डॉ. सरगु कृष्णमूर्ति - तुलनात्मक अनुसंधान एवं उसकी समस्याएँ, पृष्ठ - 33

महती सम्पदा से समृद्ध भी होंगे। हिंदी को राजभाषा के साथ-साथ राष्ट्रभाषा एवं सम्पर्क भाषा के विराट एवं महान उत्तरदायित्व को निभाना है। इसके लिए उसे अपने प्रादेशिक स्वरूप को राष्ट्रीय स्वरूप में विकसित करना।''[1] प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि तुलनात्मक अध्ययन की हिंदी राजभाषा, राष्ट्रभाषा एवं संपर्क भाषा का उत्तरदायित्व निभाने में मदद होती है।

तुलनात्मक अध्ययन के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए डॉ. विजयपाल सिंह लिखते हैं - ''1. इन अध्ययनों से तुलनीय पक्षों की ऐसी विशेषताओं का उद्घाटन भी हो जाता है, जो सामान्य अध्ययन के द्वारा प्रकाश में नहीं आ पाती। 2. तुलनीय कवि या कृतियाँ एक-दूसरे को नवीन संदर्भ प्रदान करते हैं। एक-दूसरे के संदर्भ में इनका नवीन रूप प्रकट होता है। 3. तुलनात्मक शोधकार्य भाषा और साहित्य के परस्पर संपर्क को बढ़ाता है। 4. एक भाषा के साहित्य अध्ययन-अध्यापन के लिए दूसरी भाषा और साहित्य की सामग्री का उपयोग किया जा सकता है। (उदा. तेलगु भाषी हिंदी विद्यार्थी को तेलगु साहित्य के आधार पर हिंदी साहित्य का बोध कराया जा सकता है।) 5. दो भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन से 'मशीन ट्रांसलेशन' आदि में सहायता मिल सकती है। 6. पारस्परिक संपर्क एवं आदान-प्रदान से भाषाओं और साहित्य के क्षितिज विस्तृत होते हैं। 7. तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा समता और विभेदों का तटस्थ अध्ययन करके भ्रम और पूर्वग्रह से मुक्त हुआ जा सकता है। 8. एक ही देश की विभिन्न इकाइयों की परस्पर निकट आने की संभावनाओं को प्रोत्साहन मिलता है। 9. देश की विविधता और विचित्रता में मूलभूत एकता का अंतदर्शन कराने में तुलनात्मक शोधकार्य का अत्यंत महत्त्व है।''[2]

तुलनात्मक अध्ययन के महत्त्व के बारे में डॉ. भिमसेन निर्मल लिखते हैं - ''एकता को उजागर कर, भारत की भावात्मक एकता को सदृढ़ बनाने की दिशा में तुलनात्मक अध्ययन का विशिष्ट महत्त्व है।''[3] स्पष्ट है कि एकता को स्थापित कर भावात्मक एकता को सुदृढ़ बनाना। बापट लिखते हैं - ''भारतीय समाजाच्या दृष्टीने या विषयाचे महत्त्व केवळ विद्यापीठातील विद्याशाखा एवढेच नाही. त्याला राष्ट्र उभारणीच्या दृष्टिने महत्त्व आहे अशी

---

1. सं. डॉ. गुलाम रसूल, डॉ. सरगु कृष्णमूर्ति - तुलनात्मक अनुसंधान एवं उसकी समस्याएँ, पृष्ठ - 33
2. सं.ह.भा.राजूरकर, डॉ.बोरा - हिंदी अनुसंधान के आयाम, पृष्ठ - 194
3. सं.ह.भा.राजूरकर, डॉ.बोरा - हिंदी अनुसंधान का स्वरूप, पृष्ठ - 169

माझी धारणा आहे.''[1] (भारतीय समाज की दृष्टि से इस विषय का महत्त्व विश्वविद्यालयों की केवल विद्याशाखाओं तक ही सीमित नहीं है बल्कि राष्ट्र विकास की दृष्टि से भी महत्त्व है ऐसी मेरी धारना है।) उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि तुलनात्मक अध्ययन का महत्त्व राष्ट्र-विकास के लिए भी है।

तुलनात्मक अध्ययन के महत्त्व को प्रतिष्ठापित करते हुए डॉ. अर्जुन चव्हाण लिखते हैं - ''राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता तीव्रता से अनुभव हो रही है। तुलनात्मक अध्ययन एवं अनुसंधान की उपयोगिता बहु अयामी होने के फलस्वरूप अब इसका महत्त्व भी बढ़ गया है।''[2] तुलनात्मक अध्ययन के महत्त्व के बारे में ई. मोहनदास लिखते हैं - ''1. तुलनात्मक अध्ययन का लक्ष्य आलोचना एवं साधारण अनुसंधान से भी अधिक महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि सभी उच्चतर ज्ञान की प्राप्ति तुलना पर आधारित है। 2. तुलनात्मक अध्ययन व्यक्ति के सीमित ज्ञान का विकास करता है। 3. तुलनात्मक अध्ययन व्यक्ति को भाषा, साहित्य, देश, काल के बन्धन से विमुक्त कर ज्ञानार्जन में सहायता देता है। 4 .विभिन्न भाषाओं की भाषागत विशेषताओं में साहित्यगत एकता का निरूपण होता है। 6. हिंदी और प्रादेशिक दोनों साहित्यों की समृद्धि होती है।''[3]

तुलनात्मक अध्ययन का महत्त्व सांस्कृतिक एकता, भाषा का प्रचार एवं प्रसार, विश्वभाषा में एकता स्थापित कर ''वसुधैव कुटुंबकम्'' की कल्पना को वास्तव में उतारने में मदद होना, उच्चस्तर की ज्ञान प्राप्ति आदि विभिन्न तुलनात्मक अध्ययन के महत्त्व हैं।

3.1.5 तुलनात्मक अध्ययन का उद्देश्य -

अनेक दृष्टियों से अनेक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। मानव जाति के कल्याण के लिए जितने भी विधायक कार्य किए गए हैं उनमें से एक है तुलनात्मक अध्ययन। तुलनात्मक अध्ययन के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए ई. मोहनदास लिखते हैं - ''सभी साहित्यिक विद्वत्ता स्थूल तथ्यों पर नहीं, अपितु मूल्यों तथा गुणों पर आधारित रहती है। तुलना से प्राप्त निष्कर्ष के माध्यम से मानव मूल्यों का उद्घाटन तथा

---

1. वसंत बापट - तौलनिक साहित्याभ्यास : मूलतत्वे आणि दिशा, पृष्ठ - 13
2. डॉ. अर्जुन चव्हाण - अनुवाद चिंतन, पृष्ठ - 25
3. सं. डॉ. गुलाम रसूल, डॉ. सरगु कृष्णमूर्ति - तुलनात्मक अनुसंधान एवं उसकी समस्याएँ, पृष्ठ - 112-113

अज्ञात ज्ञान-राशी का प्रकाशन होता है यही तुलनात्मक अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है।''[1] तुलनात्मक अध्ययन के उद्देश्य के बारे में शेख नाजीर का कहना है - ''विभिन्न साहित्य की भाषागत विशेषताओं में से साहित्यगत एकरूपता या समानता का निरुपण करना तुलनात्मक अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है।''[2] डॉ. राजमल बोरा लिखते हैं - ''इस प्रकार का अनुसंधान राष्ट्रीय एकता को बल देने में सहायक प्रमाणित होगा।''[3] मराठी के प्रसिद्ध विद्वान बापट लिखते हैं - ''तौलनिक साहित्याभ्यासाचा हेतू काय? या प्रश्नाचे उत्तर 'इतर मानवी विद्यांचा जो हेतू तोच' असेच द्यावे लागेल.''[4] (तौलनिक साहित्य अध्ययन का उद्देश्य क्या है? इस सवाल का यही उत्तर देना पड़ेगा कि अन्य मानवीय विद्याओं का जो उद्देश्य है वही उद्देश्य इस अध्ययन का भी है।

तुलनात्मक अध्ययन से अध्ययनकर्ता की दृष्टि व्यापक बन जाती है। संपूर्ण राष्ट्र या मानवजाति एक है यह बात स्पष्ट हो यह एक तुलनात्मक अध्ययन का उद्देश्य है। इस बात को स्पष्ट करते हुए बापट लिखते हैं - ''राष्ट्रीय साहित्याच्या स्वरूपाचे आणि परंपरांचे सर्व बाजूंनी दर्शन होऊन त्या संबंधीची आपली जाणीव समृद्ध करणे हा हेतु आहे.''[5] (राष्ट्रीय साहित्य के स्वरूप और परंपराओं का सभी दृष्टियों से अध्ययन कर उस संबंध में अपनी जानकारी को समृद्ध करना ही इसका उद्देश्य है।) एक साहित्य-कृति की दूसरे साहित्य कृति से तुलना कर किसी को श्रेष्ठ साबित करना और दूसरी को कनिष्ठ दिखाना यह तुलनात्मक अध्ययन का उद्देश्य नहीं है। इस संबंध में अपनी बात को स्पष्ट करते हुए बापट लिखते हैं - ''साहित्याचे गुणमापन करणे अथवा उत्कृष्ट साहित्याचे नियम सिध्द करणे ही या अभ्यासाची उद्दिष्टे नाहीत. भिन्न भिन्न परंपरांचे भान ठेवणे, साहित्यातील साम्य आणि विरोध याचा शोध घेणे आणि शक्य तेथे अशा साम्य विरोधांची मीमांसा करणे याची येथे अपेक्षा आहे.''[6] (गुणमापन करना अथवा श्रेष्ठ साहित्य के नियमों को सिद्ध करना यह इस अध्ययन का उद्देश्य नहीं है। अलग-अलग परंपराओं का ध्यान रखते हुए साहित्य के साम्य-वैषम्य को खोजना और जहाँ जरूरी हो वहाँ ऐसे साम्य-वैषम्य के कारणों को स्पष्ट कर देना यहाँ अपेक्षित है।)

....

1. सं. डॉ. गुलाम रसूल, डॉ. सरगु कृष्णमूर्ति - तुलनात्मक अनुसंधान एवं उसकी समस्याएँ, पृष्ठ - 113
2. वही, पृष्ठ - 107
3. सं.भ.ह.राजूरकर, डॉ.राजमल बोरा - तुलनात्मक अध्ययन : स्वरूप और समस्याएँ, पृष्ठ - 108
4. वसंत बापट - तौलनिक साहित्याभ्यास : मूलतत्वे आणि दिशा (भूमिका से उद्धृत), पृष्ठ - 13
5. वही, पृष्ठ - 21
6. वही, पृष्ठ - 12

तुलनात्मक अध्ययन के 'उद्‌देश्य' को स्पष्ट करते हुए डॉ. सरगु कृष्णमूर्ति लिखती हैं - "जाति, धर्म, संप्रदाय, भाषा, बोली, टोली, दल, प्रांत, देश, खण्ड आदि भेदों के बीच शाश्वत रूप से अखंड अनंत, अनश्वर एवं अक्षुण्ण बनकर प्रकाशित होनेवाले विश्वमानव के मन का पुन:प्रदर्शन ही तुलनात्मक अध्ययन का आद्‌य लक्ष्य है।"[1] तुलनात्मक अध्ययन से अध्ययनकर्ता की दृष्टि व्यापक बनने में मदद होना, मानव मूल्यों का उद्‌घाटन कर अज्ञात ज्ञानराशी प्रकाश में लाना, साहित्यगत एकरूपता या समानता का निरूपण करना, राष्ट्रीय साहित्य के स्वरूप एवं परंपराओं का सभी दृष्टियों से अध्ययन कर अपनी जानकारी को समृद्‌ध करना आदि तुलनात्मक अध्ययन के महत्त्वपूर्ण उद्‌देश्य है।

3.2 तुलनात्मक अध्ययन का स्वरूप :

हर साहित्य कृति अपने भाषा के उन्नयन में अपना योगदान देती है। भाषा जितनी प्रगत और विकसित होती है उतनी समाज के विभिन्न प्रदेशों के लोगों की उस भाषा के प्रति आस्था बढ़ती जाती है। सीमित ज्ञानक्षेत्र से बाहर आया हुआ आज का नवपाठक अन्यान्य भाषाओं के साहित्य को पढ़ने की अपेक्षा रखता है। उस वक्त तुलनात्मक अध्ययन उसकी उन अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए कारगर सिद्‌ध होता है। स्वातंत्र्यपूर्वकालीन साहित्यिक अनुसंधान में एक भाषा के विधागत अनुसंधान में जादा रूचि दिखाई देती है लेकिन स्वतंत्रता के पश्चात् समय की माँग को देखते हुए तुलनात्मक अनुसंधान ज्यादा मात्रा में होता हुआ दिखाई देता है।

तुलनात्मक अनुसंधान में आम तौर पर दो भाषाओं के साहित्य की तुलना की जाति है। उसकी गुण-दोषों को परखकर साहित्यिक मूल्यांकन जैसे उसके श्रेष्ठता-कनिष्ठता, अच्छे-बुरे आदि को निश्चित किया जाता है, साथ-साथ दो भिन्न भाषाओं के परिवेश का, सामाजिक तथा सांस्कृतिक तथ्यों का अध्ययन करने के पश्चात् दो कृतियों के साम्य और भेदों को स्पष्ट किया जाता है। सफल तुलनात्मक अध्ययन के लिए कुछ जरूरी बातों को ध्यान में रखना आवश्यक होता है जिससे तुलनात्मक अध्ययन सफल हो जाता है। सफल तुलनात्मक अनुसंधान के बारे में हिंदी एवं मराठी के तुलनात्मक अध्ययन के वरिष्ठ समीक्षक डॉ. चंद्रकांत

1. सं. डॉ. गुलाम रसूल, डॉ. सरगु कृष्णमूर्ति - तुलनात्मक अनुसंधान एवं उसकी समस्याएँ, पृष्ठ - 13

बांदिवडेकर लिखते हैं - "तुलना ही किमान दोन कलाकृति, दोन लेखक, दोन साहित्यिक प्रवृत्ति यांच्यात होते. मात्र कोणत्याही दोन कलाकृति, लेखक वा प्रवृत्ति यांच्यात तुलना करणे शक्य असले तरी फलप्रद होतेच असे नाही. तुलनीय वस्तुत लक्षणीय साम्य असेल वा एकमेकांवर प्रकाश टाकून एकमेकाला अधिक उठाव देणारा विरोध वा वैषम्य असेल तर तुलनात्मक समीक्षा व्यापार अधिक सार्थक होतो."[1] (तुलना कम से कम दो कलाकृति, दो लेखक, दो साहित्यिक प्रवृत्तियों में होती है। लेकिन किसी भी दो कलाकृति, लेखक या प्रवृत्ति की तुलना करना संभव हो तो भी वह सफल (फलप्रद) होती ही है ऐसा नहीं। तुलनीय वस्तुओं में लक्षणीय साम्य होगा या एक-दूसरे पर प्रकाश डालकर एक-दूसरे को अधिक उछालनेवाला विरोध या वैषम्य होगा तो वह तुलनात्मक समीक्षा व्यापार अधिक सफल (सार्थक) होता है।) उक्त कथन से स्पष्ट होने में देर नहीं लगती कि तुलनात्मक अनुसंधान याने किसी विषय या साहित्य के बड़े-छोटे होने की चर्चा नहीं बल्कि दो विभिन्न भाषा-भाषी साहित्य की विशिष्टताओं को उनके साम्य-भेदों की चर्चा करते हुए स्पष्ट करना है।

सफल तुलनात्मक अध्ययन के लिए यह निर्देश निश्चय ही तुलनात्मक अध्ययन के बारे में संदिग्धता दिखाई देती है। इस संदिग्धता को दूर करने हेतु मराठी के प्रसिद्ध समीक्षक वसंत बापट लिखते हैं - "साहित्याचे गुणमापन करणे अथवा उत्कृष्ठ साहित्याचे नियम सिध्द करणे ही या अभ्यासाची उद्दिष्टे नाहीत. भिन्न-भिन्न परंपरांचे भान ठेवणे, साहित्यातील साम्य आणि विरोध यांचा शोध घेणे आणि शक्य तेथे अशा साम्य-विरोधांची कारण मीमांसा करणे यांची येथे अपेक्षा आहे."[2] (साहित्य का गुणमापन करना तथा श्रेष्ठ साहित्य के नियमों को सिद्ध करना यह इस अध्ययन का उद्देश्य नहीं है, अलग-अलग परंपराओं का ख्याल रखते हुए साहित्य में स्थित साम्य-वैषम्य को खोजना और जहाँ संभव हो वहाँ ऐसे साम्य-वैषम्य की कारणों की मीमांसा करना यह अपेक्षित है।) इस संदर्भ में डॉ. चंद्रभानु सोनवणे लिखते हैं - "भाषा और साहित्य के क्षेत्र में शोध कार्य करने के लिए दो क्षेत्रों में पारस्परिक समता, विषमता की अपेक्षा अधिक अपेक्षित है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि तुलनात्मक शोध के क्षेत्र में पचास प्रतिशत से अधिक समता अपेक्षित है।"[3] उक्त कथन से

---

1. सं.डॉ. चंद्रशेखर जहागिरदार : तौलनिक साहित्याभ्यास : तत्वे आणि दिशा, पृष्ठ - 230
2. वसंत बापट - तौलनिक साहित्याभ्यास : मूलतत्वे आणि दिशा, पृष्ठ - 12
3. सं.डॉ. ब.ह.राजूरकर, डॉ. राजमल बोरा - तुलनात्मक अध्ययन : स्वरूप और समस्याएँ, पृष्ठ - 28

स्पष्ट होता है कि तुलना के लिए 'समता' की आवश्यकता होती है। फिर भी निम्नलिखित तथ्यों को आधार मानकर तुलना की जाती है -

1. काल के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन,
2. विषय के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन,
3. वातावरण के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन,
4. भाव के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन,
5. कथ्य के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन,
6. विचार के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन,
7. शिल्प के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।

उपर्युक्त तथ्यों को आधार मानकर भिन्न भाषा-भाषी साहित्यिक रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है।

3.3 तुलनात्मक अध्ययन : विभिन्न प्रणालियाँ :

तुलनात्मक अध्ययन की कोई निश्चित प्रणाली नहीं है। तुलनात्मक अध्ययन की प्रणालियों के संबंध में डॉ. मनमोहन सहगल ने अपनी पुस्तक 'हिंदी शोधतंत्र की रूपरेखा' में तुलनात्मक अध्ययन प्रणालियों के दस मूल आधारों को स्पष्ट किया है, वे क्रमश: इस प्रकार हैं -

"1. दो भाषाएँ एक विधा,
2. एक ही भाषा की दो विधाओं अथवा प्रवृत्तियों का अध्ययन,
3. एक ही भाषा साहित्य में दो कालों की तुलना,
4. एक ही भाषा-साहित्य में दो लेखक या दो कृतियाँ,
5. दो भिन्न भाषाओं के साहित्य का काल-विशेष,
6. दो भाषाओं के दो अलग-अलग लेखक,
7. दो भिन्न भाषाओं की एक ही विधा पर लिखनेवाले दो लेखक,
8. दो भिन्न भाषाओं की एक साहित्यिक प्रणाली,

9. दो भिन्न भाषाओं के काव्यशास्त्र की तुलना,

10. दो भिन्न भाषाओं का भाषा वैज्ञानिक अथवा व्याकरण सम्बन्धी (किसी अंग का) तुलनात्मक अध्ययन।"[1]

डॉ. मनमोहन सहगल द्वारा बताई गई दस प्रणालियों में से किसी भी एक प्रणाली को आधार बनाकर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

1. दो भाषाएँ एक विधा -

इस प्रणाली में शोधार्थी अपनी मातृभाषा तथा हिंदी की किसी एक साहित्यिक विधा को अध्ययन के लिए अपना सकता है। इसमें मुख्यत: उपन्यास, काव्य, नाटक, कहानी आदि विधाओं का सर्वांगीण अथवा पहलू विशेष का अध्ययन इसके अंतर्गत आता है। जैसे - 'हिंदी तथा मराठी संतकाव्य का तुलनात्मक अध्ययन'

'हिंदी तथा पंजाबी उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन'

'हिंदी तथा बंगाली उपन्यास में नायक की परिकल्पना'

'हिंदी तथा गुजराती नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन'

'हिंदी तथा मराठी महाकाव्यों में सामाजिक परिवेश'

इसमें मुख्यत: साम्य-वैषम्य को आधार बनाकर शोध कार्य संपन्न किया जा सकता है।

2. एक ही भाषा की दो विधाओं अथवा प्रवृत्तियों का अध्ययन -

इस प्रणाली में शोधार्थी शोध-क्षेत्र को दो भिन्न भाषाओं एक सूत्र में बाँधने की अपेक्षा एक ही भाषा की दो प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। जैसे -

'कृष्णभक्ति तथा रामभक्ति धाराओं की मूल चेतना में अंतर'

'प्रेममार्गी तथा ज्ञानमार्गी शाखाओं की दार्शनिक पृष्ठभूमि की तुलना'

'हिंदी कहानी तथा उपन्यासों का शिल्पगत अनुशीलन'

आदि विषयों को आधार बनाकर तुलनात्मक अध्ययन हो सकता है।

---

1. डॉ. मनमोहन सहगल - हिंदी शोध-तंत्र की रूपरेखा, पृष्ठ - 38-40

3. एक ही भाषा साहित्य में दो कालों की तुलना -

इस प्रणाली में शोधार्थी दो अलग-अलग कालों की कोई एक पद्धति अथवा उन युगों में लिखित साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन भी संभव है। जैसे -

'हिंदी गद्य के विकासक्रम में भारतेन्दु एवं द्विवेदी युगों का तुलनात्मक अध्ययन'

'मध्यकालीन एवं आधुनिक महाकाव्यों में नायक का स्वरूप'

'आदिकालीन एवं रीतिकालीन वीर-काव्य का तुलनात्मक अनुशीलन'

'स्वातंत्र्यपूर्व एवं स्वातंत्र्योत्तर कालीन हिंदी कहानी में ग्रामीण जीवन का तुलनात्मक अध्ययन'

इस प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन विशेष नहीं हुआ है। शोधार्थी को इन विषयों को आधार बनाकर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

4. एक ही भाषा-साहित्य में दो लेखक या दो कृतियाँ -

इस प्रणाली में एक ही भाषा-साहित्य के दो लेखकों अथवा दो कृतियों का अध्ययन किया जा सकता है। जैसे -

'भ्रमरगीत के संदर्भ में सूरदास तथा नंददास का तुलनात्मक अनुशीलन'

'सूरदास तथा तुलसीदास का तुलनात्मक अध्ययन'

'रामचरितमानस अथवा साकेत का तुलनात्मक अध्ययन'

'कबीर और जायसी के रहस्यवाद का तुलनात्मक अध्ययन'

आदि विषयों को आधार बनाकर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

5. दो भिन्न भाषाओं के साहित्य में एक काल-विशेष -

इस प्रणाली में किसी भी दो भाषाओं के साहित्य के काल विशेष को लेकर अध्ययन हो सकता है। जैसे -

'हिंदी और मराठी का निर्गुण संतकाव्य तुलनात्मक अध्ययन',

'हिंदी और मराठी का आधुनिक गद्य साहित्य तुलनात्मक अध्ययन'।

इस प्रणाली में शोधार्थी को दोनों भाषाओं तथा साहित्य की जानकारी होना महत्त्वपूर्ण बात है, तभी वह इस प्रकार के तुलनात्मक अध्ययन को न्याय दे पाता है। अतः उपर्युक्त विषयों को लेकर तुलनात्मक अध्ययन हो सकता है।

6. दो भाषाओं के दो अलग-अलग लेखक -

इस प्रणाली में शोधार्थी हिंदी के साथ-साथ अपनी मातृभाषा अथवा किसी अन्य भाषा का ज्ञाता हो, तो वह एक हिंदी लेखक के साथ अन्य भाषा के किसी लेखक की रचनाओं के 'कथ्य और शिल्प', 'कला सौंदर्य' आदि तथ्यों की तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कर सकता है। जैसे -

डॉ. अष्टेकर का शोध प्रबंध 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवं विष्णुशास्त्री चिपलूणकर',
डॉ. रामप्रसाद अग्रवाल का 'आदिकवि वाल्मीकि तथा महाकवि तुलसीदास की रामायण का तुलनात्मक अध्ययन',
डॉ. अलका निकम द्वारा प्रस्तुत शोध प्रबंध ''नागार्जुन और नारायण सुर्वे के काव्य में चित्रित प्रगतीशील चेतना का तुलनात्मक अध्ययन''[1],
डॉ. रमेश गवळी द्वारा प्रस्तुत ''देवेश ठाकुर और भालचंद्र नेमाडे के उपन्यासों में शिक्षा व्यवस्था : तुलनात्मक अध्ययन''[2],
डॉ. एकनाथ पाटील का ''नागार्जुन और आनंद यादव के कथा-साहित्य में चित्रित ग्राम्य-जीवन का तुलनात्मक अध्ययन''[3]

आदि विषयों को आधार बनाकर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

7. दो भिन्न भाषाओं की एक ही विधा पर लिखनेवाले दो लेखक -

इस प्रकार के शोध का क्षेत्र बड़ा व्यापक है। कविता, नाटक, कथा-साहित्य आदि विधाओं के प्रवृत्तिजन्य साम्यता रखनेवाले अनेक लेखक अध्ययनार्थ अपनाए जा सकते हैं। जैसे - 'गुजराती कवि न्हानालाल तथा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र', 'पंजाबी कवि भाई वीरसिंह तथा जयशंकर प्रसाद', 'उपन्यासकार प्रेमचंद तथा नानकसिंह', 'नाटककार भारतेन्दु

---

1. शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की पीएच्.डी. उपाधि हेतु स्वीकृत शोध-प्रबंध।
2. वही
3. वही

तथा ब्रजलाल शास्त्री', 'कबीर और तुकाराम' आदि लेखकों का तुलनात्मक अनुशीलन संभावित है।

8. दो भिन्न भाषाओं की एक साहित्यिक प्रणाली -

इस प्रणाली में शोधार्थी को दोनों भाषाओं की किसी एक साहित्यिक प्रवृत्ति अर्थात् विशेषताओं को जानना होता है और उसके अंतर्गत तुलनात्मक शोध की योजना बनानी होती है। जैसे - 'तेलगु तथा हिंदी में वैष्णव भक्ति साहित्य', 'हिंदी तथा मराठी संतों की रहस्य-साधना', 'गुजराती तथा हिंदी कृष्ण काव्य' आदि विषयों को आधार बनाकर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

9. दो भिन्न भाषाओं के काव्यशास्त्र की तुलना -

इस प्रणाली में ऐसा शोध कार्य अभि तक कम मात्रा में संपन्न हुआ है। जैसे - डॉ. मनोहर काळे का 'आ. हिंदी तथा मराठी के काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन', डॉ. भट्ट ए.आर. का शोध-प्रबंध 'हिंदी तथा कोकणी का भाषाशास्त्रीय तुलनात्मक अध्ययन' उपलब्ध है। इस प्रणाली के अंतर्गत हिंदी-बंगाली, हिंदी-कन्नड, हिंदी-गुजराती के काव्यशास्त्रों का तुलनात्मक अनुशीलन की सम्भावनाएँ मौजूद हैं।

10. दो भिन्न भाषाओं का भाषा वैज्ञानिक अथवा व्याकरण संबंधी (किसी अंग का) तुलनात्मक अध्ययन -

इस प्रणाली में दो भिन्न भाषाओं के भाषा तथा व्याकरण को आधार मानकर तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। हिंदी द्विलिंगी भाषा है, संस्कृत तथा भारत की अन्य भाषाएँ त्रिलिंगी है। लिंग भेद के कारण क्रिया प्रयोगों में सहज अंतर आता है, तथा लिंग परिवर्तन, संधी विच्छेद, समास विग्रह, उपसर्ग-प्रत्यय आदि नियम जैसे भेद को लेकर तुलनात्मक अनुशीलन किया जा सकता है। यह दो भाषाओं की व्याकरणिक तुलना होगी। भाषा विज्ञान की दृष्टि से तुलनात्मक पहलु, भाषागत लाघव, विस्तार, अर्थ परिवर्तन, उच्चारण

परिवर्तन आदि होंगे। इसमें बऱ्हाटे बाळकृष्ण सदाशिव का 'आधुनिक हिंदी और मराठी भाषाओं में प्रयुक्त संयुक्त क्रियाओं का अध्ययन' शोध-प्रबंध आता है।

उपर्युक्त दस प्रणालियों से तुलनात्मक अध्ययन हो सकता है।

3.4 विवेच्य उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन :

विवेच्य उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन इस प्रकार संपन्न होगा -

3.4.1 विवेच्य विषय के तुलनात्मक अध्ययन की उपयोगिता -

गिरिराज किशोर ने 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में मोहनदास का तथा विश्वास पाटील ने 'महानायक' उपन्यास में सुभाषबाबू के चरित्र का चित्रण किया हुआ दिखाई देता है। दोनों उपन्यासों के नायकों द्वारा भारत की स्वतंत्रता के लिए किए गए संघर्ष का चित्रण करना ही दोनों लेखकों का प्रधान उद्देश्य रहा है। दोनों के चरित्रों को उद्घाटित करना भी महत्त्वपूर्ण है।

'पहला गिरमिटिया' उपन्यास के बारे में श्रीलाल शुक्ल जी लिखते हैं - ''यह कृति निश्चय ही हमारे विशेषत: नयी पीढ़ी के लिए आश्चर्ययुक्त (महात्मा गांधी) के जटिल जीवन और दर्शन को संवेदना और समझ के साथ पहचानने में मदद करेगी।''[1] तो मराठी तथा हिंदी के प्रसिद्ध समीक्षक डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर 'महानायक' के बारे में लिखते हैं - ''सुभाषचंद्र बोस के राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय कृतित्व को पहली बार देश के सामने प्रस्तुत करने साथ ही भारतीय स्वातंत्र्य समर के कुछ उपेक्षित सशस्त्र क्रांतिकारियों की भी महनीय भूमिका पर प्रकाश डाला है।''[2]

गिरिराज किशोर ने 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में मुख्यत: बैरिस्टर होने के बाद वकालत में असफलता, एक साल के गिरमिटपर दक्षिण अफ्रीका जाने का निर्णय, अश्वेत होने के कारण फर्स्ट क्लास टिकट होने पर भी दो गोरे अधिकारियों द्वारा पिटाई होना तथा रेल से बाहर फेंकना, अश्वेत होने के कारण 'ग्रैण्ड नेशनल होटल' में प्रवेश न मिलना, पार्डीफोक में कोच बॉक्स में एक गोरे अधिकारी द्वारा पिटना, गिरमिटियों में एकता निर्माण करने का

---

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया - फ्लैप से उद्धृत
2. विश्वास पाटील - महानायक (अनु.रामजी तिवारी) - फ्लैप से उद्धृत

प्रयास, गिरमिटियों के दु:ख-दर्द को वाणी देने के लिए 'इण्डियन ओपिनियन' की स्थापना करना, गिरमिटियों पर हो रहे अन्याय-अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाना तथा उन्हें उनके अधिकार वापिस दिलाने में प्रयत्न करना आदि बातों का उद्घाटन किया है।

'महानायक' उपन्यास में विश्वास पाटील ने सुभाषबाबू के मुख्यत: आय.सी.एस. से त्यागपत्र, काँग्रेस का अध्यक्ष बनना, गांधीजी के साथ मतभेद, जर्मन में हिटलर से भेट, मदद न मिलनेपर पणडुब्बियों से जपान जाना, जपान में 'आजाद हिंद फौज' का निर्माण, हवाई जहाज दुर्घटनाओं में सुभाषबाबू की मौत होना आदि घटनाओं का उद्घाटन किया है।

3.4.2 विवेच्य उपन्यासों के अध्ययन का महत्त्व -

स्वातंत्र्यपूर्व एवं स्वातंत्र्योत्तर ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजकीय परिवेश का अंकन करना। मोहनदास गांधी तथा सुभाषबाबू जैसे महापुरुषों के चरित्र को यथार्थ रूप में दुनिया के सामने रखना। स्वतंत्रता संग्राम को जिन महान विभूतियों ने अपने खून से सिंचा है ऐसे महान देशभक्तों से प्रेरणा ग्रहण करना, देशाभिमान तथा देशनिष्ठा के साथ-साथ राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य के बारे में समाज जागृति करना, 'महानायक' के सुभाषबाबू (नेताजी) के बारे में लोगों के मन में जो गलत फहमियाँ थी उनको दूर करने का प्रयास करना, दोनों उपन्यासकारों के विचारों को (विचार पक्ष को) पाठकों के सामने प्रस्तुत करना आदि की दृष्टि से यह विषय महत्त्व रखता है। जैसे - उपदेश विषयक विचार, जनवादी विचार, राष्ट्र विषयक विचार, मूल्य विषयक विचार, अर्थ विषयक विचार, श्रम विषयक विचार, विद्रोह विषयक विचार, परिवर्तन विषयक विचार तथा इतिहास विषयक विचार आदि को समाज के सामने प्रस्तुत करना।

3.4.3 विवेच्य विषय के तुलनात्मक अध्ययन का उद्देश्य -

विवेच्य विषय के तुलनात्मक अध्ययन का उद्देश्य है दोनों उपन्यासकारों के 'विचार पक्ष' का अध्ययन करना, दोनों उपन्यासों के महानायकों की स्वतंत्रता के लिए किए कार्य को समाज के सामने प्रस्तुत करना, दोनों उपन्यास के नायकों के संघर्ष तथा उनके आदर्श

व्यक्तित्व को लोगों के सामने रखना। तत्कालीन ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक, राजकीय स्थित्यंतर को तुलनात्मक अध्ययन द्वारा प्रकाश में लाना।

3.4.4 विवेच्य विषय के तुलनात्मक अध्ययन का स्वरूप -

प्रस्तुत विषय का अध्ययन दो भिन्न भाषाओं की एक साहित्यिक प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन पद्धति के अनुसार किया जायेगा। प्रस्तुत पद्धति में दो भिन्न भाषाओं के एक ही प्रवृत्ति पर लिखनेवाले दो उपन्यासकारों का तुलनात्मक अध्ययन हो रहा है। गिरिराज किशोर ने हिंदी में 'पहला गिरमिटिया' तो विश्वास पाटील ने 'महानायक' ऐतिहासिक चरित्र को लेकर खुलकर लिखा है। उपर्युक्त दोनों उपन्यास ऐतिहासिक चरित्र-प्रधान उपन्यास हैं। दोनों उपन्यासकारों के उपन्यास 'पहला गिरमिटिया' तथा 'महानायक' में आए दोनों महान चरित्रों के उदात्त विचारों का तुलनात्मक अध्ययन होना अपेक्षित है। इसलिए मैंने प्रस्तुत शोध का विषय "'पहला गिरमिटिया' तथा 'महानायक' का विचार पक्ष : तुलनात्मक अध्ययन" लिया है।

इस विषय के अध्ययन का स्वरूप मैंने पाँच अध्यायों में विभाजित किया है। प्रथम अध्याय में मैंने दोनों उपन्यासकारों का व्यक्तित्व एवं कृतित्व, द्वितीय अध्याय में दोनों उपन्यासों का विषयगत विवेचन, तृतीय अध्याय में तुलनात्मक अध्ययन का स्वरूपगत विवेचन, चतुर्थ अध्याय में 'विचार पक्ष' का तुलनात्मक अध्ययन, पंचम अध्याय में औपन्यासिक कला की दृष्टि से विवेच्य उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन आदि का विवेचन किया है।

3.4.5 विवेच्य विषय के तुलनात्मक अध्ययन की प्रविधि -

डॉ. मनमोहन सहगल ने 'हिंदी शोध तंत्र की रूपरेखा' इस ग्रंथ में तुलनात्मक अध्ययन की दस पद्धतियाँ बताई हैं। प्रस्तुत पद्धतियों में आठवीं अर्थात् 'दो भिन्न-भिन्न भाषाओं की साहित्यिक प्रवृत्ति' पर आधारित यह शोध कार्य आधारित है। इस पद्धति के अनुसार "'पहला गिरमिटिया' तथा 'महानायक' का विचार पक्ष : तुलनात्मक अध्ययन" इस विषय पर एम्.फिल. का शोध-प्रबंध संपन्न होगा।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्याय में तुलनात्मक अध्ययन का स्वरूपगत विवेचन प्रस्तुत किया गया है जिसमें तुलनात्मक अध्ययन की उपयोगिता, महत्त्व, स्वरूप और तुलनात्मक अध्ययन की विविध प्रणालियों पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही विवेच्य उपन्यासों के तुलनात्मक अध्ययन की उपयोगिता, महत्त्व, उद्देश्य, स्वरूप और पद्धतियों को स्पष्ट किया है। तुलनात्मक अध्ययन के पश्चात् जो निष्कर्ष या तथ्य सामने आए हैं वे इस प्रकार हैं -

1. प्राय: तुलना का मतलब सिर्फ दो कृतियों के गुण-दोष, श्रेष्ठ-कनिष्ठ साहित्य कृति सिद्ध करना नहीं बल्कि तुलनात्मक अध्ययन से दो साहित्यकारों के साहित्य का सूक्ष्मता से सूक्ष्म अध्ययन करके उनमें स्थित साम्य-वैषम्य को प्रस्तुत करना है।
2. दो भिन्न भाषा-भाषी साहित्य से परिचित होने के कारण इससे दो भाषाओं के व्याकरण, भाषा, शैली आदि से लाभान्वित होने में मदद होती है।
3. तुलनात्मक अध्ययन से विश्वबंधुत्व की भावना बढ़ती है तथा राष्ट्रीय एकता निर्माण होने में मदद होती है।
4. तुलनात्मक अध्ययन दो भिन्न भाषाओं की एक साहित्यिक विधा का अध्ययन, एक ही भाषा की दो विधाओं अथवा प्रवृत्तियों का अध्ययन, एक ही भाषा साहित्य में दो लेखक या दो कृतियाँ, दो भिन्न भाषाओं के काल-विशेष, दो भाषाओं के दो अलग-अलग लेखक, दो भिन्न भाषाओं के एक ही विधा पर लिखनेवाले दो लेखक, दो भिन्न भाषाओं की एक साहित्यिक प्रवृत्ति, दो भिन्न भाषाओं के काव्यशास्त्र की तुलना, दो भिन्न भाषाओं का भाषा-वैज्ञानिक तथा व्याकरण संबंधी तुलना तथा दो भिन्न भाषाओं के दो लेखकों के समग्र साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन आदि प्रणालियों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
5. विवेच्य उपन्यासकारों के उपन्यासों में निहित 'विचार पक्ष' का अध्ययन करने के पश्चात् विवेच्य उपन्यासों के लेखकों के विचारों को समझने में मदद होती है।

****